

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 21: बली का बन्धन

18 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जैसे ही भगवान का चरण सृष्टि के शिखर तक उठता है, ब्रह्मा उसका स्वागत करने आते हैं, अपने ही कमण्डलु से जल गिराकर उसका पूजन करते हैं — और उस दिव्य चरण के प्रक्षालन से पवित्र गंगा का जन्म होता है, जो सदा के लिए तीनों लोकों को पावन करेगी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। यह इक्कीसवाँ अध्याय भगवान वामन के चरण का अनुसरण सृष्टि के शिखर तक करता है, और वामन-कथा को बली के बन्धन के क्षण तक ले आता है।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 21 (इक्कीसवाँ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान वामन के डग और बली-बन्धन
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — बली और असुरों के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नर्मदा पर भृगुकच्छ में बली की यज्ञभूमि के ऊपर सृष्टि की ऊँचाइयाँ
- केन्द्रीय विषय: ब्रह्मा द्वारा भगवान के चरण का पूजन, गंगा का जन्म, असुरों का क्रोध, काल की शक्ति के समक्ष बली का संयम, और बली का बन्धन
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 1-34
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

बीसवें अध्याय में, अपने ही गुरु द्वारा वचन निभाने के लिए शापित होने पर भी, बली ने दिव्य वामन को भूमि दी और आनन्द से उनके चरण धोए, जबकि स्वर्ग ने उन पर पुष्प बरसाए। फिर वह छोटा वामन विराट रूप में बढ़ा और दो महान डग भरे — पृथ्वी और स्वर्ग को ढँकते हुए, यहाँ तक कि तीसरे के लिए स्थान शेष न रहा। यह अध्याय भगवान के उस चरण का अनुसरण करता है जो आगे ब्रह्मा के लोक तक उठता है।

ब्रह्मा भगवान के चरण का पूजन करते हैं और गंगा का जन्म होता है

भगवान के चरण को सत्यलोक तक पहुँचा देखकर, अपने ही लोक को उसके चन्द्रमा-सम नखों की आभा से मलिन होते देखकर, ब्रह्मा उसका स्वागत करने आगे आए। उनके साथ मरीचि तथा अन्य महर्षि, आजीवन ब्रह्मचारी और सनन्दन आदि योगी, तथा वेदों एवं पवित्र विद्याओं के अधिष्ठाता देवगण आए — वे सभी जिन्होंने ज्ञानाग्नि में अपने कर्मों के मल को भस्म कर दिया था। तब ब्रह्मा ने उस भगवान के उठे हुए चरण को, जिनके नाभि-कमल से वे स्वयं उत्पन्न हुए थे, जल अर्पित करके पूजन किया, और भक्ति से उनकी स्तुति की। और वह जल, भगवान के चरण के प्रक्षालन से पवित्र होकर, स्वर्ग की नदी बन गया।

धातुः कमण्डलुजलं तदुरुक्रमस्य

पादावनेजनपवित्रतया नरेन्द्र ।

स्वर्धुन्यभून्नभसि सा पतती निमार्ष्टि

लोकत्रयं भगवतो विशदेव कीर्तिः ॥ ४ ॥

धातुः कमण्डलुजलं तदुरुक्रमस्य पादावनेजनपवित्रतया नरेन्द्र स्वर्धुन्यभून्नभसि सा पतती निमार्ष्टि लोकत्रयं भगवतो विशदेव कीर्तिः

अर्थ: हे नरेन्द्र, ब्रह्मा के कमण्डलु का जल, विशाल डग भरने वाले भगवान के चरण को धोने से पवित्र होकर, स्वर्ग की नदी गंगा बन गया; आकाश से गिरता हुआ वह तीनों लोकों को उसी प्रकार पावन करता है जैसे भगवान की निर्मल कीर्ति। (स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 4)

लोक आनन्दित होते हैं और जाम्बवान विजय की घोषणा करता है

श्रद्धा से पूर्ण ब्रह्मा तथा लोकों के अन्य पालक, अपने अनुयायियों सहित, अपने ही भगवान का — जिन्होंने अब अपना विस्तार पुनः अपने छोटे रूप में समेट लिया था — सुगन्धित पुष्पों, धूप, दीप, स्तुतिगान, नृत्य, तथा शंख और दुन्दुभि के नाद से पूजन किया। और भालुओं के राजा जाम्बवान ने, मन के समान वेगवान, दौड़ते हुए अपना ढोल बजाकर समस्त दिशाओं में विजय के महान उत्सव की घोषणा की।

जाम्बवानृक्षराजस्तु भेरीशब्दैर्मनोजवः ।

विजयं दिक्षु सर्वासु महोत्सवमघोषयत् ॥ ८ ॥

जाम्बवानृक्षराजस्तु भेरीशब्दैर्मनोजवः विजयं दिक्षु सर्वासु महोत्सवमघोषयत्

अर्थ: मन के समान वेगवान भालुओं के राजा जाम्बवान ने अपने ढोल के बारम्बार नाद से समस्त दिशाओं में उस विजय की घोषणा की — जो महान उत्सव से चिह्नित थी। (स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 8)



भालुओं के राजा जाम्बवान अपना ढोल बजाते हैं और समस्त दिशाओं में भगवान की विजय के महान उत्सव की घोषणा करते हैं, जबकि देवता उस भगवान का पूजन करते हैं जिन्होंने अपना विराट रूप पुनः छोटे वामन में समेट लिया है (श्लोक 5-8)।

असुर क्रोध से उठ खड़े होते हैं

किन्तु असुर, तीन पग भूमि की याचना के बहाने अपने स्वामी की समस्त पृथ्वी को छीना गया देखकर, क्रोध से भर उठे। वे आपस में कहने लगे कि यह कोई याचक ब्राह्मण नहीं बल्कि स्वयं विष्णु है, मायावियों में श्रेष्ठ, जो देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए वेश बदलकर आया है; कि याचना के बहाने, ब्राह्मण बालक के वेश में एक शत्रु ने उनके स्वामी को — जिसने अपने यज्ञ के लिए समस्त हिंसा त्याग दी थी — उसके

सर्वस्व से वंचित कर दिया। उन्होंने घोषित किया कि इस व्यक्ति को मारना ही उनका कर्तव्य और उनके स्वामी की सेवा है; और अपने भाले तथा शस्त्र उठाकर असुर-सेना दिव्य वामन पर प्रहार करने आगे दौड़ी, यद्यपि बली स्वयं यह नहीं चाहते थे।

दैत्य सेनापतियों को भगवान पर टूट पड़ते देख, विष्णु के पार्षद हँस पड़े और शस्त्र उठाकर उनसे भिड़ने खड़े हो गए। नन्द और सुनन्द, जय और विजय, पक्षिराज गरुड़, तथा अन्य बलशाली पार्षद — प्रत्येक दस सहस्र हाथियों के बल वाला — असुर-सेना को तितर-बितर करने निकल पड़े।



भगवान विष्णु के बलशाली पार्षद, हँसते हुए और शस्त्र उठाए, उस क्रुद्ध असुर-सेना को लौटाने खड़े होते हैं जो दिव्य वामन पर प्रहार करने आगे दौड़ी है (श्लोक 14-17)।

काल की शक्ति के समक्ष बली अपनी सेना को रोकते हैं

अपने ही लोगों को भगवान के पार्षदों द्वारा मारा जाता देख, और अपने गुरु शुक्राचार्य के शाप का स्मरण करके, बली ने अपने क्रुद्ध सैनिकों को रोका। उन्होंने उन्हें नाम लेकर पुकारा — विप्रचित्ति, राहु, नेमि — और उन्हें युद्ध रोककर लौट जाने को कहा, क्योंकि वर्तमान समय उनके पक्ष में नहीं था। उन्होंने शिक्षा दी कि समस्त प्राणियों के स्वामी भगवान पर, जो प्रत्येक प्राणी को सुख और दुःख देते हैं, कोई अपने बल से विजय नहीं पा सकता।

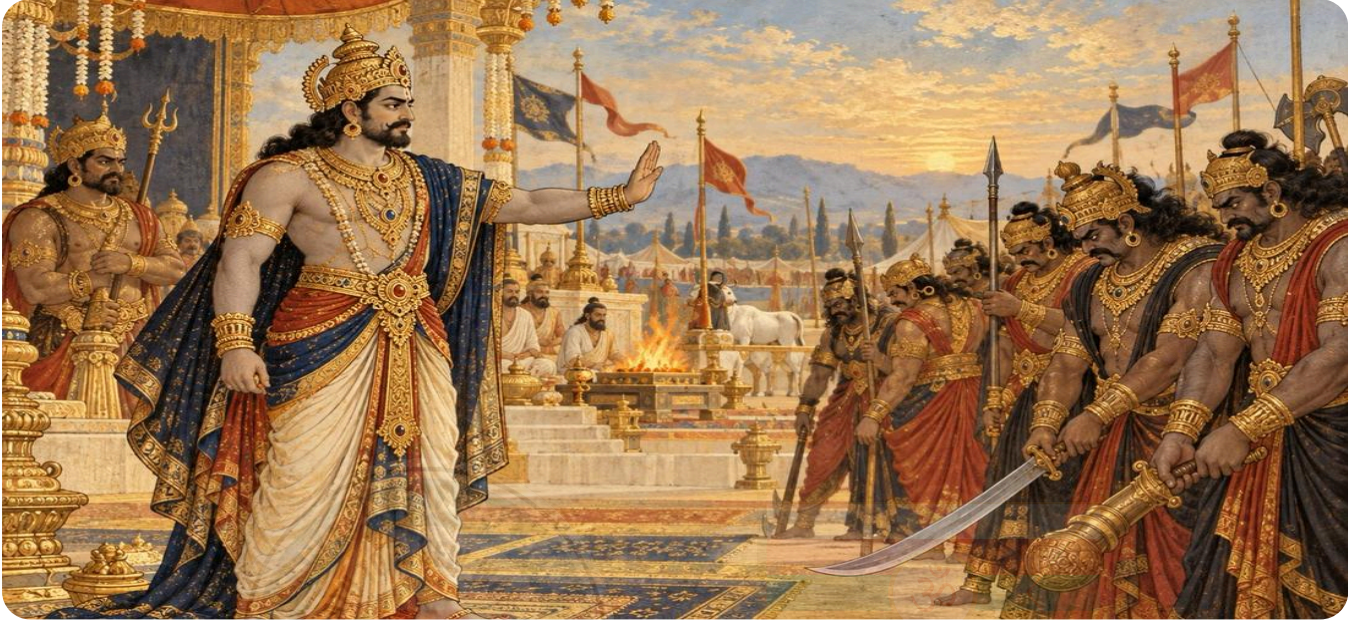
यः प्रभुः सर्वभूतानां सुखदुःखोपपत्तये ।

तं नातिवर्तितुं दैत्याः पौरुषैरीश्वरः पुमान् ॥ २० ॥

यः प्रभुः सर्वभूतानां सुखदुःखोपपत्तये तं नातिवर्तितुं दैत्याः पौरुषैरीश्वरः पुमान्

अर्थ: हे दैत्यो, कोई भी व्यक्ति अपने पराक्रम से उस भगवान को — उस बलवान नियन्ता को, जो समस्त प्राणियों के सुख और दुःख का विधान करते हैं — लौंघ नहीं सकता। (स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 20)

बली ने कहा कि जो भगवान कभी उनकी वृद्धि और देवताओं के हास के अनुकूल थे, वही अब इसके विपरीत कर रहे हैं; और कोई प्राणी बल, मन्त्रणा, बुद्धि, दुर्ग, मन्त्र-औषधि, अथवा साम आदि उपायों से काल को पार नहीं कर सकता। यह केवल विधि (दैव) ही है, उन्होंने सिखाया, जो हर ऐसे संघर्ष का पलड़ा बदलती है, और संसार की कोई भी शक्ति उसे समय से पहले मोड़ नहीं सकती। हरि के ये वही पार्षद, जिन्हें असुरों ने कई बार परास्त किया था जब भाग्य उनके अनुकूल था, अब विजयी थे क्योंकि विधि पलट गई थी। अतः, उन्होंने परामर्श दिया, उन्हें युद्ध से हटकर ऐसे समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए जो पुनः उनके हित में हो।



अपने गुरु के शाप का स्मरण करके और काल की इच्छा के आगे झुककर, राजा बली अपने क्रुद्ध सैनिकों को रोकते हैं, यह शिक्षा देते हुए कि उस भगवान को कोई नहीं जीत सकता जो समस्त प्राणियों के सुख-दुःख का विधान करते हैं (श्लोक 18-24)।

बली वरुण के पाशों से बाँधे जाते हैं

अपने स्वामी के वचन सुनकर, विष्णु के पार्षदों से पराजित दैत्य और दानव नायक ब्रह्माण्ड के निचले लोकों में लौट गए। तब गरुड़, कश्यप-पुत्र, विराट रूप धारण किए भगवान की मूक इच्छा को पढ़कर, तुरन्त उस पराजित राजा को पकड़ने बड़े और यज्ञ-कर्म के समापन के साथ ही उन्हें दृढ़ता से जकड़ लिया।

अथ तार्क्ष्यसुतो ज्ञात्वा विराट्प्रभुचिकीर्षितम् ।

बबन्ध वारुणैः पाशैर्बलिं सूत्येऽहनि क्रतौ ॥ २६ ॥

अथ तार्क्ष्यसुतो ज्ञात्वा विराट्प्रभुचिकीर्षितम् बबन्ध वारुणैः पाशैर्बलिं सूत्येऽहनि क्रतौ

अर्थ: तब गरुड़, कश्यप के पुत्र, विराट रूप वाले भगवान की इच्छा जानकर, यज्ञ के अन्तिम दिन बली को वरुण के पाशों से बाँध दिया। (स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 26)

प्रसिद्ध असुरराज के बन्दी बनाए जाने पर स्वर्ग, पृथ्वी और प्रत्येक दिशा में महान हाहाकार उठ खड़ा हुआ — फिर भी बली, जिनका धैर्य अटल था, तनिक भी विचलित न हुआ।

यह बन्धन भगवान का क्रोध नहीं, अपितु उनकी सबसे गहरी कृपा है। किसी साधारण राजा के लिए ऐसा पतन केवल विपत्ति होता; किन्तु जिस भक्त ने पूर्ण समर्पण कर दिया है, उसके लिए यह स्वयं भगवान का हाथ है जो उसे अपने और निकट खींच रहा है। कहा जाता है कि जब भगवान किसी आत्मा पर विशेष कृपा करते हैं, तो वे पहले उससे, धीरे-धीरे, वह सब छीन लेते हैं जिसे वह आत्मा अपना मानती है — दण्ड देने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि उनके और उसके बीच कुछ भी शेष न रहे। बली का यह बन्धन वही कृपा है कर्मरूप में: उनका राज्य, उनकी सेना और उनकी स्वतन्त्रता छीनकर, भगवान उन्हें समर्पण के अतिरिक्त सब कुछ से रिक्त कर देते हैं, और उस और भी बड़े वरदान के लिए तैयार करते हैं जो अब प्रकट होने वाला है (श्लोक 26-28)।



गरुड़ महान राजा बली को वरुण के पाशों से बाँध देते हैं जब लोकों में हाहाकार उठ खड़ा होता है; फिर भी बली, मन में अटल, शान्त गरिमा के साथ खड़े रहते हैं (श्लोक 25-27)।

भगवान तीसरे चरण के लिए माँगते हैं

तब भगवान ने, अपने वामन रूप में, बली से कहा — जो वरुण के पाशों से बँधे थे, अपनी सम्पत्ति से रहित, मन में स्थिर, और उदार यश वाले थे।

पदानि त्रीणि दत्तानि भूमेर्मह्यं त्वयासुर ।

द्वाभ्यां क्रान्ता मही सर्वा तृतीयमुपकल्पय ॥ २९ ॥

पदानि त्रीणि दत्तानि भूमेर्मह्यं त्वयासुर द्वाभ्यां क्रान्ता मही सर्वा तृतीयमुपकल्पय

अर्थ: हे असुर, तुमने मुझे तीन पग भूमि दी थी; दो डगों से समस्त पृथ्वी ढँक गई — अब तीसरे के लिए भूमि प्रदान करो। (स्कन्ध 8, अध्याय 21, श्लोक 29)

भगवान ने कहा कि जो कुछ सूर्य से तपता है, चन्द्रमा और तारों से प्रकाशित होता है, और मेघों से सींचा जाता है, वह सब बली का था; एक डग से उन्होंने पार्थिव प्रदेश और आकाश को ढँका, और दूसरे से स्वर्ग को — तो तीसरे के लिए स्थान कहाँ? उन्होंने कहा कि प्रतिज्ञात वस्तु न देने पर मनुष्य नरक में वास पाता है; और बली, अपनी उदारता पर इतने गर्वित, अब उस वचन का परिणाम भोगें जिसे वे पूरा न कर सके। इसी के साथ अगले अध्याय में बली के उस प्रसिद्ध उत्तर के लिए मंच तैयार हो जाता है, जब वे भगवान के तीसरे चरण के लिए अपना ही मस्तक अर्पित करते हैं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान का स्पर्श सदा के लिए पावन कर देता है। भगवान के चरण के मात्र प्रक्षालन से पवित्र गंगा का जन्म होता है, एक ऐसी नदी जो तीनों लोकों को पावन करती है — यह संकेत कि जो कुछ भी दिव्यता के सम्पर्क में आता है, वह पवित्र हो जाता है (श्लोक 3-4)।
2. सच्ची विजय गर्व से नहीं, आनन्द से घोषित होती है। जाम्बवान अपना ढोल बजाते हुए दिशाओं में दौड़ते हैं, और देवता गान तथा उत्सव से भगवान का पूजन करते हैं, क्योंकि धर्म की विजय साझे आनन्द का अवसर है (श्लोक 5-8)।
3. भक्ति क्रोध को रोकती है। यद्यपि उनके लोग मारे जा रहे हैं, बली क्रोध को अपने ऊपर शासन नहीं करने देते; अपने गुरु का वचन स्मरण करके और काल की गति पढ़कर, वे अपने सैनिकों को ऐसे युद्ध से लौटा लेते हैं जिसे वे जीत नहीं सकते (श्लोक 18-19)।
4. कोई काल की इच्छा को पार नहीं कर सकता। बली शिक्षा देते हैं कि बल, मन्त्रणा, बुद्धि और प्रत्येक मानवीय उपाय उस भगवान के समक्ष शक्तिहीन हैं जो समस्त प्राणियों के सुख-दुःख का विधान करते हैं — एक विनम्र करने वाला ज्ञान जो उनके समर्पण का बीज बन जाता है (श्लोक 20-24)।
5. विपत्ति किसी अटल आत्मा को हिला नहीं सकती। वरुण के पाशों से बँधे और अपने राज्य से रहित होकर भी बली मन में अटल रहते हैं, यह दिखाते हुए कि बाहरी हानि उसे विचलित नहीं कर सकती जिसका हृदय सत्य पर स्थिर है (श्लोक 26-28)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय आत्म-संयम के एक शान्त कर्म पर घूमता है। बली के सैनिक मर रहे हैं, उनका राज्य जा चुका है, और उनका क्षत्रिय रक्त युद्ध के लिए पुकार रहा है — और संसार की दृष्टि में शस्त्र हाथ में लिए मर जाना सरल, यहाँ तक कि सम्मानजनक होता। किन्तु बली अपने क्रोध से परे देखते हैं। वे अपने गुरु के शाप का स्मरण करते हैं, वे काल के हाथ को पहचानते हैं, और वे समझ जाते हैं कि उनके साथ जो हो रहा है वह पराजय नहीं बल्कि भगवान की इच्छा का प्रकट होना है। अतः वे वह कठिनतम कार्य करते हैं जो एक गर्वित राजा कर सकता है: वे रुक जाते हैं। वे अपनी सेना को रोक लेते हैं, बन्धन के पाशों को बिना विरोध स्वीकार करते हैं, और खड़े रहते हैं अटल, जबकि उनके चारों ओर लोक विलाप करते हैं। उसी स्थिरता में उनकी महानता का रहस्य है। वही नदी जो तीनों लोकों को पावन करने के लिए भगवान के चरण से जन्मी, अपनी ही रीति से बली के हृदय में भी प्रतिबिम्बित होती है — समर्पण की एक धारा जो उनके गर्व के अन्तिम अंश को भी धो डालती है, ताकि जब भगवान तीसरे चरण के लिए माँगें, तो बली अपनी शेष एकमात्र वस्तु देने को तैयार हों: स्वयं को।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज, जब आपके भीतर क्रोध अथवा किसी परिणाम को बलपूर्वक साधने की चाह उठे, तो बली के संयम का अभ्यास करें। प्रतिक्रिया से पूर्व रुकें, और शान्त भाव से पूछें कि क्या यह आपके कर्म का क्षण है अथवा भगवान की इच्छा के आगे झुकने का समय। जैसे ही वह आवेग शान्त हो, उसे भगवान को इन शब्दों के साथ अर्पित करें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” यह विश्वास करते हुए, जैसे बली ने किया, कि हमारा कोई बल काल को नहीं लाँघ सकता, और कि जो हृदय दिव्यता के आगे झुकता है वह उस किसी वस्तु को नहीं खोता जो वस्तुतः उसकी अपनी है।

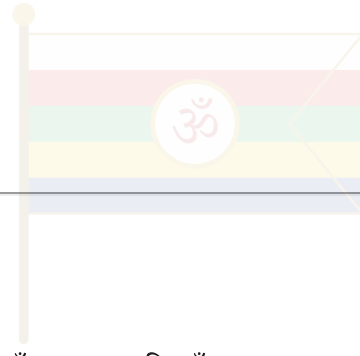
उपसंहार

इक्कीसवाँ अध्याय बली के जीवन के सर्वोत्तम क्षण की दहलीज़ पर समाप्त होता है। बन्धन में और अपनी समस्त सम्पत्ति से रहित होकर भी वे अटल खड़े हैं — क्योंकि जो पतन-सा प्रतीत होता है, वह स्वयं भगवान की कृपा है, जो समर्पण के अतिरिक्त सब कुछ बुहार कर हटा देती है। बली से हम यह सीखें कि जब काल हमारी योजनाओं के विरुद्ध मुड़ जाए, तो वह पराजय नहीं बल्कि भगवान को सब कुछ अर्पित कर देने का निमन्त्रण है, इस विश्वास के साथ कि हमारे वास्तविक हित को केवल वे ही जानते हैं। अगला अध्याय बली के निर्भय उत्तर को खोलता है, जब वे अपना ही मस्तक भगवान के चरणों में अर्पित करते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, इक्कीसवाँ अध्याय, पृष्ठ 820–823।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बन्ध अथवा उसके अनुमोदन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-21-vamana-strides-bali-bound-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

